कोस मीनार *Kos Minar*

आलेख : डा डी. एन. डिमरी, डॉ संगीता चक्रवर्ती, बी. आर. सिंह, नयन आनन्द चक्रवर्ती एवं राजेन्द्र यादव

छायाचित्र : एस. सी. गुप्ता

Text Compiled by : Dr. D. N. Dimri, Dr. Sangeeta Chakraborty, Nayan Anand Chakraborty & Rajendra Yadav

Photograph : S. C. Gupta

© भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, जयपुर मण्डल, जयपुर, 2003

© Archaeological Survey of India, Jaipur Circle Jaipur, 2003

Printed at : Kanti Offset Printers, Lalji Sand Ka Rasta, Jaipur

अजमेर की पुरातात्विक धरोहर

Archaeological Heritage of Ajmer

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण

Archaeological Survey of India

जयपुर मण्डल, जयपुर

Jaipur Circle, Jaipur

अजमेर की पुरातात्विक धरोहर

प्राचीन अजयमेरु के नाम से प्रसिद्ध अजमेर हिन्दू–मुस्लिम साझी संस्कृति के लिए विख्यात है । सूफी संत मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह, पुष्कर स्थित पवित्र सरोवर एवं ब्रह्मा मंदिर इस क्षेत्र को पवित्र तीर्थ–स्थल के रूप में अलग पहचान दिलाते हैं । सातवीं शताब्दी में राजा अजयपाल चौहान द्वारा बसाया गया यह शहर ११९३ ई० तक राजपूत सत्ता का प्रमुख केन्द्र रहा। मोहम्मद गौरी द्वारा पृथ्वीराज चौहान की पराजय के बाद अजमेर दिल्ली सल्तनत का भाग बन गया । पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य में यह शहर मेवाड़ के शासक राणा कुम्भा के अधिकार में रहा । सन् १५५८ ई० में अजमेर मुगल शासक अकबर के साम्राज्य का अभिन्न अंग बना । तदुपरान्त जहाँगीर और शाहजहाँ ने इस शहर को पर्याप्त महत्व दिया एवं समय–समय पर यहाँ शाही दरबार का आयोजन किया । मुगलों के बाद अजमेर मराठा शासकों के अधीन रहा तदुपरान्त सन् १८१८ ई० में इस शहर को अंग्रेज शासकों ने अपने अधीन कर लिया । अपने लम्बे घटनापूर्ण ऐतिहासिक काल में अजमेर कला व संस्कृति का महत्वपूर्ण केन्द्र बना, जिसके प्रमाण यहां के सुन्दर स्मारक हैं इन महत्वपूर्ण स्मारकों का विवरण निम्न है ।

अढ़ाई-दिन-का झोंपड़ा : कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा लगभग १२०० ई० में निर्मित यह मस्जिद अढ़ाई–दिन–का झोंपड़ा के नाम से जानी जाती है। ऐसा विश्वास है कि इस स्थान पर ढ़ाई दिन चलने वाले उर्स के कारण इस मस्जिद का नाम अढ़ाई–दिन–का झोंपड़ा पड़ा । मस्जिद के बरामदे सुन्दर अलंकृत स्तम्भों से युक्त हैं। प्रार्थना कक्ष के ऊपर छत को सहारा देते तीन पंक्तियों में स्तम्भों का सुन्दर संयोजन मिलता है। सामने ऊँचे कोणाकार मेहराब बने हैं जिन पर बारीक अलंकरण है। स्तम्भ युक्त कक्ष को नौ अष्टकोणीय भागों में बाँटा गया है जिसके ऊपर मध्य मेहराब के दोनों पार्श्व में दो छोटी मीनार बनी है। मध्य मेहराब पर कूफिक एवं तुगरा लिपि के उत्कीर्ण लेख इस स्मारक को भव्यता प्रदान करते है ।

अढ़ाई-दिन-का झोंपड़ा *Adhai-Din-ka Jhonpara*

बादशाही हवेली : अकबर के शासन काल में निर्मित यह इमारत योजना में आयताकार है । इसके मध्य में एक कक्ष है, जिसके चारों ओर बरामदे बने हैं। सम्पूर्ण हवेली दोहरे स्तम्भों पर आधारित है । बरामदे के ऊँचे–चौकोर स्तम्भ, भव्य अलंकृत तोड़ेदार छज्जे इस स्मारक की प्रमुख विशेषता हैं ।

बावड़ी : अजमेर से १८ कि०मी० पूर्वोत्तर दिशा में अजमेर–जयपुर रोड पर स्थित यह बावड़ी मीकाजी–की–बावड़ी के नाम से भी जानी जाती है । इसमें संगमरमर पट्टिका पर उत्कीर्ण हिजरी १०२४ (१६१५ ई०) का फारसी लेख उत्कीर्ण है । अभिलेख फलक पर उकडू बैठा हुआ हाथी, अंकुश एवं त्रिशूल बना है । बावड़ी में पानी के स्तर तक पहुंचने के लिए सीढ़ियाँ बनाई गई है ।

अब्दुल्ला खान का मकबरा *Tomb of Abdulla Khan*

दिल्ली दरवाजा : ख्वाजा साहब की दरगाह के उत्तर में स्थित इस दरवाजे का निर्माण अकबर के शासन काल में हुआ था । दरवाजे के मेहराब पर सुन्दर नक्काशी एवं रंगों द्वारा अलंकरण किया गया है । मेहराब के निचले भाग में पत्र–लता अलंकरण में पीला, गुलाबी एवं सफेद रंगो का प्रयोग किया गया है । दरवाजे में एक गज–पृष्ठाकार कक्ष तथा इसके दोनों पार्श्व में सुरक्षा कर्मियों के लिए कक्ष बने हैं । इसमें लगा भारी लकड़ी का दरवाजा आज भी दर्शनीय है ।

त्रिपोलिया दरवाजा : लाल बलुए पत्थर से निर्मित यह दरवाजा ख्वाजा साहब की दरगाह के पश्चिम में स्थित है । ऊँचे मेहराब से युक्त द्वार के दोनों ओर दीवारों पर अलंकरण बने हैं तथा मेहराब के दोनों किनारों पर गुलदस्ते उत्कीर्ण हैं । इस दरवाजे का निर्माण मुगल शासक अकबर के समय में हुआ था।

तारागढ़ दुर्ग : प्राचीन काल में अजयमेरु–दुर्ग नाम से विख्यात यह किला अरावली पहाड़ियों की पश्चिमी चोटी पर स्थित है। किले का निर्माण सम्भवतः बारहवीं शताब्दी में हुआ था। चौहान वंशीय राजा सोमेश्वर के ११७० ई. के बिजौलिया शिलालेख में अजयमेरू का उल्लेख मिलता है। कालान्तर में राजपूत शासकों के शासन काल में इस किले का नाम तारागढ़ पड़ा। सत्रहवीं शताब्दी के लोक–गीतों में इसका नाम गढ़ बीटली आता है। किले में नौ प्रवेश–

द्वार तथा चौदह बुर्जियां थीं। पहाड़ी पर स्थित अंतिम द्वार को तारागढ़ प्रवेश-द्वार के नाम से जाना जाता है । शाहजहाँ के सेनापति गौड़ राजपूत विट्ठलदास ने सन् १६४४ ई० एवं १६५६ ई० के मध्य इस किले का जीर्णोद्धार करवाया ।

संगमरमर की बारादरियाँ व जंगले : अनासागर बारादरी के नाम से प्रसिद्ध इन बारादरियों का निर्माण शाहजहाँ ने सन् १६३७ में करवाया था । इस कृत्रिम झील का निर्माण पृथ्वीराज चौहान के दादा राजा अरणोराज या अनाजी ने (११३५–११५० ई०) करवाया था । यहाँ पर पाँच बारादरियाँ, एवं संगमरमर का बना हुआ हमाम मुख्य है जिनमें तीसरी बारादरी सबसे विशाल है, जो दिल्ली के लाल किले के दीवान-ए-खास की अनुकृति है । चौथे एवं पाँचवे पेवेलियन में केवल मेहराब है जिन पर सुन्दर बेल-बूटे एवं ज्यामितीय अलंकरण है । इसी परिसर में दौलतबाग के समीप सहेली बाजार नामक इमारत है ।

अलाउद्दीन खान-का-मकबरा (सोलह खम्भा) : तीन गुम्बजों से युक्त यह मकबरा सोलह स्तम्भों पर आधारित है जिसके कारण इसका नाम सोलह खम्भा पड़ा । सफेद संगमरमर से निर्मित यह आयताकार मकबरा तीन तरफ से खुला हुआ है । उत्तरी व दक्षिणी भाग में बने तीन द्वार, स्तम्भों द्वारा तीन खण्डों में विभाजित है, जबकि तीनों पूर्वी द्वार में स्तम्भ युक्त मेहराब बने है । गुलदस्तों में खोदकर लगाये गये टेढ़े-मेढ़े पत्थरों का अलंकरण इस स्मारक की प्रमुख विशेषता है । इसका निर्माण शेख अलाउद्दीन ने हिजरी १०८० में करवाया था ।

अब्दुल्ला खान एवं उसकी पत्नी का मकबरा : अब्दुल्ला खान का मकबरा जो मियां खान के नाम से जाना जाता है, का निर्माण फर्रुखसीयर के मंत्री एवं पुत्र हुसैन अली खान ने सन् १७१० ई० में करवाया था । सफेद संगमरमर से निर्मित यह वर्गाकार मकबरा ऊँची जगती पर बना हुआ है जिसमें अष्टकोणीय स्तम्भ लगे है । अन्दर के वर्गाकार भाग के मध्य में कब्र बनी है । इसके चारों कोनों पर छोटे स्तम्भ व अर्द्ध-स्तम्भ है जिनके ऊपर कोणाकार मेहराब है । इसी के सामने सफेद संगमरमर से निर्मित अब्दुल्ला खान-की-पत्नी का मकबरा है, जो कि आकार में छोटा है । छत विहीन यह मकबरा संरचना में चतुर्भुजाकार एवं ऊँची जगती पर बना है । इसके चारों ओर जालीदार परदे की दीवार खड़ी की गयी है । इन दोनों मकबरों का निर्माण अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुआ था ।

कोस मीनार : आधुनिक मील के पत्थरों के समान मुगल काल में प्रत्येक एक कोस (३.२किमी) पर मीनार बनवाई गई थी । मजबूत आधार पर खड़ी यह अष्टकोणीय मीनारें ईंटों द्वारा निर्मित है जिनमें चूने से प्लास्टर किया गया है । शेरशाह सूरी (१५४०–१५४५ ई०) द्वारा स्थापित डाक चौकी व्यवस्था से प्रेरित होकर अकबर ने इन कोस मीनारों का निर्माण करवाया था।

अकबर का किला : मैगजीन बिल्डिंग के नाम से प्रसिद्ध यह किला मुगल शासक अकबर द्वारा १५७०–१६०५ ई० में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के सम्मान में निर्मित करवाया था । इस किले का उपयोग राजस्थान व गुजरात में सैनिक अभियानों के संचालन में होता था । क्षैतिज योजना में वर्गाकार किले के चारों कोनों पर चार विशाल बुर्जियां बनी है जिसके पश्चिम में भव्य प्रवेश-द्वार तथा मध्य भाग में दर्शक कक्ष बना है । इसी स्थान पर सर टामस रो ने जहांगीर को अपना परिचय-पत्र सौंपा था। वर्तमान में इसका उपयोग राजकीय संग्रहालय के रूप में हो रहा है ।

दिगम्बर जैन संतों की छतरियाँ : अनासागर झील के उत्तर में स्थित दिगम्बर जैन संतों की छतरियों का समूह है । जैन संतों का यहीं पर मरणोपरान्त अन्तिम संस्कार किया जाता था । अधिकांशतः छतरियों में अभिलेख एवं पादुका का अंकन है ।

गोपीनाथ मंदिर, सरवाड़: यह मंदिर राजपूत नरेश गोपीनाथ गौड़ द्वारा निर्मित करवाया गया । योजना में यह मंदिर गर्भगृह एवं मण्डप युक्त है, जिसका गर्भगृह शिखर विहीन है । यहाँ उत्कीर्ण अभिलेख में मंदिर को दिए गए दान का उल्लेख किया गया है ।

महल बादशाही, पुष्कर : इस महल का निर्माण मुगल बादशाह जहांगीर द्वारा करवाया गया था। यहां ऊँची जगती पर आमने-सामने (उत्तर-दक्षिण) दो बारादरियाँ बनी है तथा मध्य में स्तम्भ युक्त खुला चबूतरा बना है। दक्षिणी बारादरी में फारसी भाषा में हिजरी १०२४ (१६१५ ई.) का लेख है। जिससे ज्ञात होता है कि इसका निर्माण अनिराय सिंह दिलान की देखरेख में हुआ था। बारादरी के स्तम्भ सादे परन्तु कोणाकार मेहराब, हीरक, आदि अलंकरणों से सुसज्जित है। ❑❑

अढ़ाई दिन-का झोंपड़ा का आंतरिक दृश्य
Interior view of Adhai-Din-ka Jhonpara

Archaeological Heritage of Ajmer

Ajmer or ancient Ajayameru is a place of true amalgam of rich Hindu and Islamic heritage due to the Brahma temple and sacred lake of Pushkar and the famous Dargah of great *sufi* saint Khwajah Mu'in al-Din Chisti. The city was founded by Raja Ajai Pal Chauhan in the seventh century AD and continued to be a major centre of the Chauhans till AD 1193. It became a part of the Delhi Sultanate when Prithviraj Chauhan lost it to Mohammad Ghori. It was in the hands of Rana Kumbha of Mewar in the mid of fifteenth century AD. Akbar annexed it in AD. 1558 and made it an integral part of his empire. Both Jahangir and Shah Jahan have paid considerable importance to Ajmer and held royal *darbars* here. After the fall of the Mughal empire, the Marathas ruled here until the British annexed Ajmer in AD 1818. During this long phase of history, Ajmer became a rich centre of art and culture, which reflect through various edifices and structures. The important ones are as under.

Adhai-Din-ka Jhonpra : It is known as Adhai-Din-ka Jhonpra, possibly from the fact that a fair used to be held here for two-and-a-half days. It was commenced by Qutbu' Din- Aibak about AD1200 with carved pillars used in colonnades. Its prayer chamber, the carved ceiling of which rests on pillars raised in three tiers, is faced by a thick screen carved with effective decoration and pierced by corbelled but engrailled arches which appear here for the first time. The pillared chamber is divided into nine octagonal compartments and has two small minarets on the top of the central arch. The three central arches carved with Kufic and Tughra inscriptions that make it a splendid architectural masterpiece.

Badshahi Haveli : This rectangular edifice was built under the order of Akbar. The roof of this building is supported by double colonnade with wide bracket capitals. Lofty square pillars of the verandah and the heavy cut stone *chhajjas* with its massive ornamental brackets are the main features of the building.

Baori : Located about 18 km northeast of Ajmer on Ajmer-Jaipur road, this *boari* known as Bhikaji-ki-Baori bears an inscription in Persian dated AH 1024 (AD 1615). The inscription is engraved on a marble slab, showing a couchant elephant, an *ankusha* and *trishul*. Steps have been provided to reach the water level.

Delhi Gate : Built during the reign of Akbar, this gate is in the north of *dargah* after Dhan Mandi. It is decorated with stucco painted designs as is evident from the arch of the gate. It has floral designs on the soffit of the archway painted with indigo-

सारागढ़ दुर्ग का प्रवेश-द्वार *Gateway of Taragarh fort*

blue, pink, white etc. The heavy wooden doors of gate are still in existence. There is the usual vaulted chamber as well as the recesses for guards on either side of the arch.

Tripolia Gate : This massive gate is on the west of *dargah* and has one portal. It is built of red sandstone while the wall is of stone and lime. The side walls are decorated with motifs of blind arches and full blown rosettes carved on the top on both sides. This gateway was also built during the reign of Akbar.

Taragarh fort : Stands on the western hill top of Aravalli range, this fort was anciently known as Ajayameru-*durga*. The inscription from Bijolia of Chahamana Someshvara of AD 1170 mentions it as Ajayameru. The fort was renamed Taragarh during the reign of Rajput rulers. It is also known as Garh Beetli in the folk songs of the seventeenth century. The fort possesses nine gateways and fourteen bastions. The last gateway, located on the top of the hill is known as gateway of Taragarh. Gor Rajput Bithaldas, the military commandant of Shah Jahan had carried out extensive repairs during AD 1644 and AD 1656.

The Marble pavilions and Balustrade : Locally known as Anasagar Baradari, these pavilions were built by Shah Jahan in AD 1637 along the artificial lake which was constructed by Arnoraja or Anaji, the grandfather of Prithviraj Chauhan in AD 1135-50. This *baradari* consists of five pavilions and *hammam* of white polished marble. Of the five pavilions, the third is the largest, built after the model of *Diwan-i-Khas* of the Red Fort of Delhi. The fourth and fifth pavilions have arches carved with floral and geometrical motifs.

Another important building in the same premises known as Saheli Bazar is just opposite the Daulat Bagh, having rooms and verandah with arched openings.

Tomb of Ala-ud-Din Khan known as Solah Khamba : The tomb is so called, because its three domes rest on sixteen pillars. Built in white marble, it is rectangular on plan and open on three sides. On the north and south, three bays are divided by groups of four columns, while on the east, there are three arched openings separated by piers. The western side shows a solid wall containing three pointed arches *(mihrabs)*. The zig-zag pattern of inlay work adorning the *guldastas* is a noticeable feature of this building. It is built by Sheikh Ala-ud-Din in AH 1070 (AD 1659).

Tombs of Abdullah Khan and His Wife : The tomb of Abdullah Khan, commonly known as Miya Khan, was built by his son Sayyid Hussain Ali Khan, the minister of king Farrukhsiyar. Standing on a raised platform, this square building is made of unpolished white marble, having octagonal columns. The tomb is built in the centre of an inner square. At the four corners, there are smaller piers and half columns having cusped arches between them.

Opposite to it, is the tomb of Abdullah Khan's wife, smaller in size and built of polished white marble. In plan, this roofless mausoleum is a quadrangle, standing upon a platform, enclosed by *jali* screens with a parapet. Both the tombs were built in the early eighteenth century AD.

Kos Minars : Like the modern milestone, these tapering *minars* denoted distance in *kos* was set up at every 3.2 km during the Mughal period. Built of bricks with lime plaster, this solid structure with octagonal base stands on a massive platform. Akbar derived this idea from Dak Chauki established by Sher Shah Suri (AD 1540-45).

अकबर महल *Akbar's Mahal*

महल बादशाही, पुष्कर *Mahal Badshahi, Pushkar*

Fort of Akbar : Popularly known as magazine building, this fort was constructed by Akbar in AH 978 (AD 1570) in the honour of Khwajah Mu'in al-Din Chisti and it was also used to supervise military expeditions in Rajasthan and Gujarat. The fort is a massive rectangular structure with four imposing bastions at the corners, an audience chamber in the centre and a magnificent gateway towards the west. It was here, the British ambassador Sir Thomas Roe presented his credentials to Jahangir. At present it is being used as government museum.

Cenotaph of Digambar Jain Saints : To the north of Anasagar lake, stands a group of cenotaph where Digambar Jain saints were cremated. Most of these cenotaphs are inscribed and have footmarks carved on them.

Temple of Gopinathji, Sarwar : Built by Rajput prince Gopinath Gaur, this temple consists of a sanctum followed by a hall. Sikhara is now missing. An inscription dated AD 1638 records donation to the temple.

Mahal Badshahi, Pushkar : Built by Emperor Jahangir as a pleasure resort for hunting expeditions. It consists of two identical pavilions built on a raised platform facing each other on the southern and northern sides and an open square pavilion in the centre. The southern pavilion has an inscription in Persian dated AH 1024 (AD 1615) describes its construction under the supervision of Anirai Singh Dilan to celebrate the Mughal victory over Rana Amar Singh of Mewar. Pillars of the pavilions are plain with Mughal motifs of cusped arches and diamonds and the porch has a pent roof consisting of two pillars and two pilasters. □ □